



इन दो वाक्यांशों को शहादा या आस्था की गवाही के रूप में जाना जाता है। इन दो वाक्यांशों पर विश्वास और इसके सत्यापन के माध्यम से व्यक्ति इस्लाम में प्रवेश करता है। यह एक केंद्रीय मान्यता है जो एक आस्तिकी जीवन भर मानता है, और यह इस दुनिया में उसकी सभी मान्यताओं, पूजा और अस्तित्व का आधार है।

नए धर्मांतरित व्यक्ति सहित प्रत्येक मुसलमान को इन दो वाक्यांशों के अर्थों को समझना होगा, और उसके अनुसार अपना जीवन जीने का प्रयास करना होगा।

## आस्था की गवाही का महत्व

यह गवाही अब तक इस्लाम धर्म का सबसे महत्वपूर्ण पहलू है, जिस पर पूरा धर्म टिका है। इस्लाम ही एकमात्र सच्चा एकेश्वरवादी धर्म है, जो इस बात पर जोर देता है कि अल्लाह के अलावा किसी और की पूजा नहीं होनी चाहिए। यह जीवन का एक तरीका है जिसमें एक व्यक्ति अल्लाह के आदेशों का पालन करता है और उनके सवाि किसी और की पूजा नहीं करता है।

आस्था की यह गवाही (शहादा) हमें जीवन में हमारे उद्देश्य की याद दिलाती है, जो कि सिर्फ अल्लाह की पूजा करना है। कुरआन में अल्लाह कहता है:

**“और मैंने जनिन तथा मनुष्य को सिर्फ अपनी पूजा करने के लिए पैदा किया है।” (कुरआन 51:56)**

ईश्वर के एक होने (तौहीद) का संदेश जैसा की गवाही में है सिर्फ पैगंबर मुहम्मद (अल्लाह की दया और आशीर्वाद उन पर हो) ने नहीं बताया था, बल्कि यह अल्लाह के सभी पैगंबरों का सार्वभौमिक संदेश था। मानवता की शुरुआत के बाद से अल्लाह ने सभी लोगों और राष्ट्रों में दूत भेजे, और उन्हें सिर्फ उसकी पूजा करने का और सभी झूठे देवताओं को अस्वीकार करने का आदेश दिया। अल्लाह ने कहा:

**“और हमने प्रत्येक समुदाय में एक दूत भेजा और कहा कि सिर्फ अल्लाह की पूजा करो, और अन्य किसी भी देवता की पूजा से बचो।” (कुरआन 16:36)**

## ला-इलाहा इल्लल्लाह का अर्थ

इस वाक्यांश में प्रत्येक शब्द का अर्थ है:

???: नहीं है; ??????: कोई ईश्वर (देवता); ??????: के सवाि; ??????: अल्लाह (ईश्वर)

और इसलिए इस वाक्यांश का शाब्दिक अर्थ है "अल्लाह के सिवा कोई ईश्वर (देवता) नहीं है"

## इस वाक्यांश का पहला भाग: अस्वीकृति

'कोई देवता नहीं है'... यहाँ, देवता का अर्थ है जो कुछ भी जिसकी पूजा की जाती है। बहुत से लोगों ने इस सृष्टि की चीजों को अपना देवता मान लिया है, लेकिन वो सभी गलत हैं और गलत तरीके से उनकी पूजा की जाती है, जिसका अर्थ है कि उन्हें उस पूजा का कोई अधिकार नहीं है और न ही वे इसके लायक हैं। यह अस्वीकृति सभी अंधविश्वासों, विचारधाराओं, जीवन के तरीकों, या किसी भी अधिकार के लिए है जो दैवीय भक्तिका दावा करते हैं।

कुछ लोग ईश्वर के ईश्वरीय राज्य को सांसारिक राज्यों की तरह होने की कल्पना करते हैं। जिस तरह एक राजा के कई मंत्री और भरोसेमंद सहयोगी होते हैं, ये लोग 'संत' और छोटे देवताओं को ईश्वर तक पहुंचने का मध्यस्थ मानते हैं। वे उन्हें एजेंट समझते हैं जिनके माध्यम से ईश्वर से संपर्क किया जाता है। सच तो यह है कि इस्लाम में कोई मध्यस्थ नहीं है, न ही कोई पादरी वर्ग है जिसके सामने क्षमा पाने के लिए अपने पापों को 'स्वीकार' करना चाहिए। एक मुसलमान सीधे और विशेष रूप से ईश्वर से प्रार्थना करता है। हम ज्योतिषि, हस्तरेखा पढ़ना, सौभाग्य आकर्षण और भाग्य बताने जैसी अंधविश्वासी प्रथाओं को भी अस्वीकार करते हैं।

## इस वाक्यांश का दूसरा भाग: पुष्टीकरण

'अल्लाह को छोड़कर'... किसी भी सृजित प्राणी की पूजा के अधिकार से इनकार करने के बाद, गवाही सिर्फ अल्लाह के ईश्वर होने की पुष्टि करता है।'

कुरआन में अल्लाह ने कई जगहों पर उल्लेख किया है कि अल्लाह के सिवा लोग इस चीज की भी पूजा करते हैं, जो किसी भी पूजा के लायक नहीं हैं, और न ही उनका उस पर कोई अधिकार है, क्योंकि वे स्वयं रचना हैं और उनमें किसी तरह का कोई लाभ देने की शक्ति नहीं है।

और उन्होंने उसके अतिरिक्त अनेक पूज्य बना लिए हैं, जो किसी चीज की उत्पत्ति नहीं कर सकते और वे स्वयं उत्पन्न किये जाते हैं और न वे अधिकार रखते हैं अपने लिए किसी हानिका, न अधिकार रखते हैं किसी लाभ का, न अधिकार रखते हैं मरण और न जीवन और न पुनःजीवित करने का।

(कुरआन 25:3)

इस प्रकार, ला इलाहा इल्लल्लाह का अर्थ है, "अल्लाह के अलावा कोई सच्चा ईश्वर नहीं है" या "अल्लाह के अलावा किसी भी ईश्वर की पूजा नहीं की जा सकती है।"

# मुहम्मद रसूल अल्लाह का अर्थ

वाक्यांश में प्रत्येक शब्द का अर्थ है:

??????: पैगंबर मुहम्मद; ??????: दूत; ??????: अल्लाह (ईश्वर)

और इसलिए इस वाक्यांश का अर्थ है, "मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं"।

इस तथ्य की गवाही देकर कोई यह पुष्टिकरता है कि पैगंबर मुहम्मद वास्तव में ईश्वर द्वारा भेजे गए पैगंबर और दूत हैं, जो मानव जातिके बीच ईश्वर का संदेश देने के लिए भेजे गए हैं, जैसा कि अन्य पैगंबर और संदेशवाहक भेजे गए थे। इस तथ्य को प्रमाणित करने से अनेक अर्थ निकलते हैं। इसमें शामिल है:

1. यह विश्वास करना कि वह अंतिम पैगंबर और दूत थे।

**“मुहम्मद तुम में से किसी के पिता नहीं है। कर्नितु, वो अल्लाह के दूत और सब पैगंबरों में अन्तमि है और अल्लाह प्रत्येक चीज़ों का अतर्जिजानी है।” (कुरआन 33:40)**

2. यह विश्वास करना कि उन्होंने अल्लाह के संदेश को ईमानदारी से उसी तरह बताया जैसा उन्हें बताया गया था। अल्लाह कहते हैं:

**“...आज मैंने तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए परंपूर्ण कर दिया है तथा तुमपर अपना पुरस्कार पूरा कर दिया और तुम्हारे लिए इस्लाम को धर्म स्वरूप चुन लिया है।...” (कुरआन 5:3)**

3. यह विश्वास करना कि वह सभी मानव जातिके लिए एक पैगंबर थे। अल्लाह कहते हैं:

**“कहो: हे मानवता! मैं आप सभी के लिए अल्लाह का दूत हूँ...” (कुरआन 7:158)**

4. यह विश्वास करना कि उन्होंने धर्म के बारे में जो कुछ भी कहा वह अल्लाह की ओर से आया था। उन्हें एक उदाहरण के रूप में लिया जाना चाहिए और बिना किसी शक के उनका पालन किया जाना चाहिए क्योंकि वह अल्लाह के नाम पर बोलते थे और उनका पालन करना अल्लाह का पालन करना है।

**“और वह अपनी इच्छा से नहीं बोलते, वह तो बस वही (रहस्योद्घाटन) है। जो (उनकी ओर) की जाती है। (कुरआन 53:3-4)**

**“जो दूत की आज्ञा का पालन करता है, वह अल्लाह की आज्ञा का पालन करता है...” (क़ुरआन 4:80)**

5. हमें उनके द्वारा लाए गए कानून के अनुसार अल्लाह की पूजा करनी चाहिए। उन्होंने मोज़ेक कानून सहित पछिले सभी कानूनों को समाप्त कर दिया।

**“और जो भी इस्लाम के सिवा किसी और धर्म को मानेगा, तो उसे कदापि स्वीकार नहीं किया जायेगा और वे परलोक में हारे हुआ में से होगा।” (क़ुरआन 3:85)**

6. पैगंबर मुहम्मद को प्यार और सम्मान दिया जाना चाहिए। उनकी नैतिकता, एकेश्वरवाद फैलाने के लिए उनके बलदान, और अपने वरिधियों के साथ धैर्य रखने के बारे में जानने से सभी लोगो का उनके प्रति सम्मान बढ़ जाता है। जतिना अधिक हम उनके जीवन और विशेषताओं के बारे में जानेंगे, उतना ही हम उनके लिए अपने प्रेम में वृद्धि करेंगे।

संक्षेप में, ??????? की गवाही का अर्थ है पैगंबर मुहम्मद ने जो आदेश दिए उनका पालन करना, उन्होंने जो सुचना दी उस पर विश्वास करना, उन्होंने जो नषिदिध किया उस पर विश्वास करना, और उनके निर्देशानुसार सिर्फ अल्लाह की पूजा करना। ये सभी बातें किसी खास लोगों या किसी खास समय तक सीमति नहीं हैं।

इस लेख का वेब पता

<https://www.newmuslims.com/hi/articles/93>

कॉपीराइट © 2011 - 2024 NewMuslims.com. सर्वाधिकार सुरक्षित।